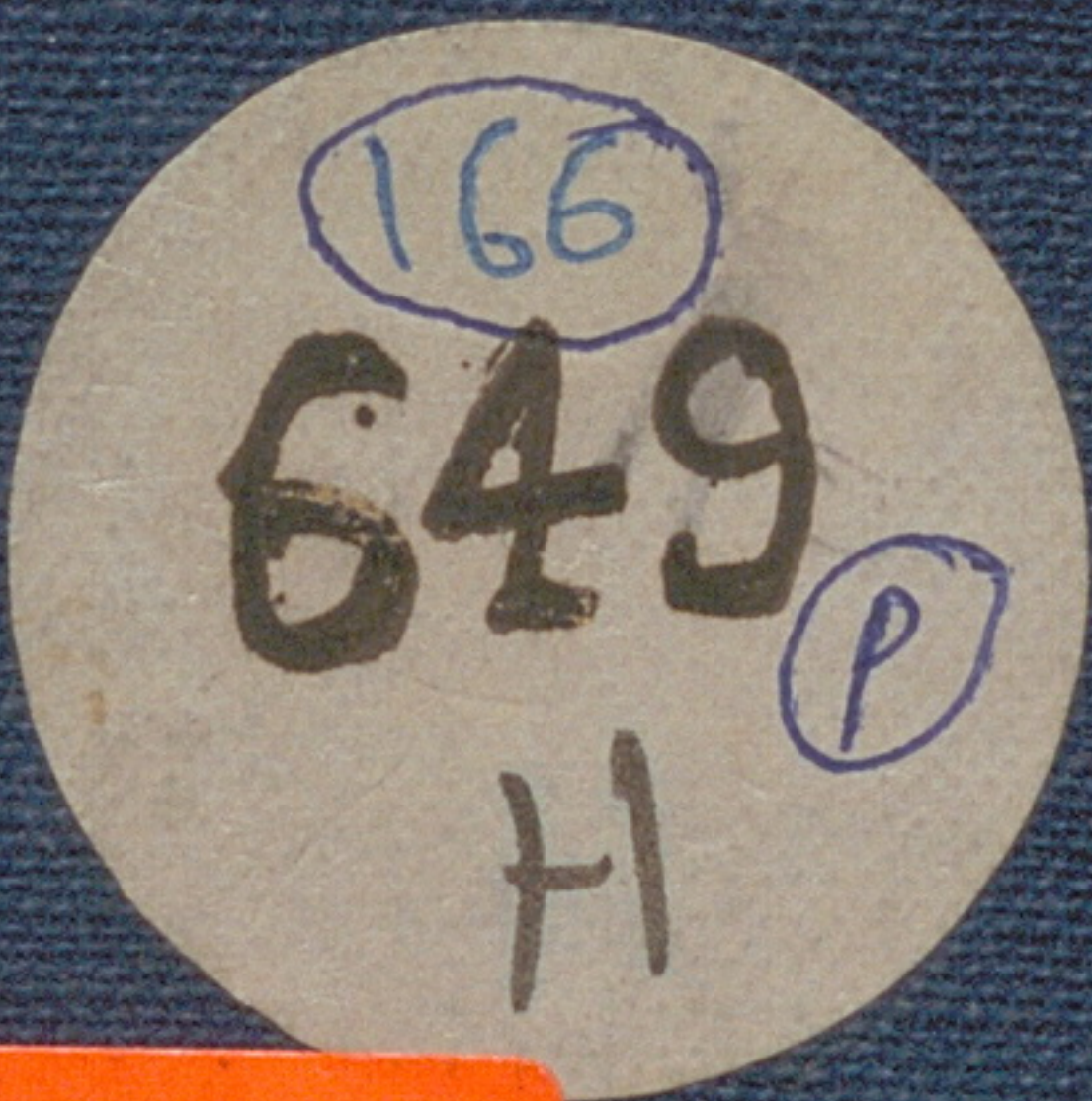


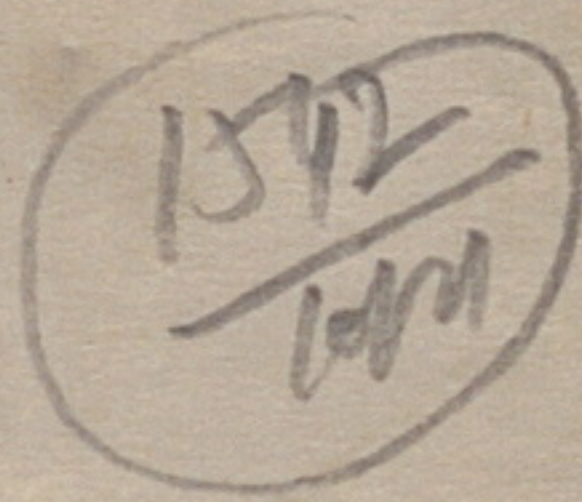


MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY

भारत सरकार
Government of India

नई दिल्ली
New Delhi



आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No.

649

②
1911

891.431
6959R

34
Rasbiya Bhatnagar

390

* ओ३म् *

राष्ट्रीय गान



मुल्क के वास्ते हाँ जाश मुहब्बत हम में ।
जान भी जाय तो बस जाय वतन के गम में ॥

संग्रहकर्ता व प्रकाशकः—

ला० छन्नूमल गुप्ता

अध्यक्ष भारत पुस्तकालय भिवानी ।

सन् १९३१

प्रथमावृत्ति २०००

मूल्य -) एक आना

द्वादश श्रेणी प्रेस देहली में छपा ।

गजल न० १

भगवन वतन हमारा बरबाद हो रहा है
दुश्मन हमारे घर पर आबाद हो रहा है
सिक्का जमा चुका है दिखला के रौब अपना
हम कैद में पड़े वह आबाद हो रहा है
लड़ २ के हम परस्पर बरबाद हो चुके हैं
इस ही से टिक रहा है और शाद हो रहा है
अपने वतन का भरता कर जुल्म पेट जालिम
भारत में सब तरह से बेदार हो रहा है
फिर भी अकल के दुश्मन हम खुद ही हो रहे हैं
भाई का एक भाई जल्लाद हो रहा है
परा धीन हैं गिर रहे हम विरधी को खो रहे है
इस फूठ में हमारा उस्ताद हो रहा है
हे ईश दो वह शक्ति भारत सुतत्र' करलें
भारत निवासियों का यां नाद हो रहा है

गजल न० २

शेर बकरी का झगड़ा हुआ आज कल ।

लाज रखनी ये मौला तेरे हाथ है ॥



(३)

जितना जी चाहे हम पर सितम ढाओ तुम ।
सब्र वालों के हरदम खुदा साथ है ॥
जुल्म अब इस कदर हम पे होने लगे ।
जान बे फायदा हाय खोने लगे ॥
अब बारां भी अब हमपे रोने लगें ।
गोलियां पड़ रहीं अब ये बरसात है ॥
हम तो हैं इस कदर दिल दुखाये हुये ।
और पीरे फलक के सताये हुये ॥
दाग पर दाग है दिल खाये हुवे ।
जो सताता है हम को वह कम जात है ॥
हो चुके है हम तो आजाद घर वार से ।
क्या डराते हो तुम हमको तलवार से ॥
जान आती है बेड़ी की झनकार से ।
हथकड़ी पहनना क्या बड़ी बात है ॥
कोई लीडर हमारा न तुम से डरा ।
जेल खाने को समझता रजाये खुदा ॥
जान जाने को हरदम समझाता रहा
ईद का दिन है या वस्ल की रात है ॥
दूर हो जायेगा हिन्द से रंज व गम ।
जान जाये तो जाये नहीं कुछ अलम ॥

(४)

बन्दरो को मकां मेन रखेंगे हम ।
यही हरवक्त हमारा ख्यालात है ॥
फैर इकदम करो या किवम्ब फैक दो ।
हम तो मौजूद है चाहै जो कुछ करो ॥
लाल कुरतो या अंगिया का फारम करो ।
हम यह समझेगें कि आज शुबरात है ॥
अब जो देहली में निकलेंगे बालन्टियर ।
कोंर बच्चों की होगी इधर और उधर ॥
अगर तुम ने जो छेड़ा भाइडीयर ।
बस समझ लेना दिन की कि अब रात है ॥

गजल न० ३

रात दिन दुश्मनों को यही फिकर है ।
देखिये अब सजा जुल्म की क्या मिले ॥
हिन्द वाले न रखेंगे अब चैन से ।
गम यह लिपटा हुवा जान के साथ है ॥
ए पूरन अब फिर जोश से तुम कहो
काम मे हरवक्त तुम अपने पूरे रहो ॥
जान जाये तो हरवक्त दिल से कहो ।
खास तेरी शहादत की यह बात है ॥

(५)

गजल न० ४

लो नमस्ते मेरी हिन्द माता हम तो होते है फांसी हवाले ।
येही ईश्वरसे बिनती हमारी तू फिर भी हमें गोद पाले ॥
तेरी भेंट में पहले यतीन्द्र . हो चुका है वह जेल के अन्दर ।
भूक हड़ताल कर वह बराबर पड़ चुका है स्वर्ग के लै॥पा
तेरी सेवा में फिर तीन प्रानी . राज गुरु सुखदेव ज्ञानी ।
वह भगतसिंह चढतीं जवानी - आज जाता मित्रों के पाले ॥
करना माता क्षमा सर नवाते - तेरे चरणों की फिर धूल चाहते ।
वही आशीश दो लों हम तो जाते बहुत तोड़े सुख के निवाले
तेरे दुश्मन न सुख से रहेंगे - गर रहेंगे तो रोते रहेंगे ।
तू होगी स्वतंत्र कहेंगे - रिपु करवा चुके हैं मुहं काले ॥

गजल न० ५

तन पै खदर हाथ में जँजीर शाहाना रहे ।
अपने गुलशन में फकत अपना ही का शाना रहे ॥
गैर की शिरकत से बेहतर है कि विराना रहे ।
बन्दु शाकी क्यों मये कौमी का मैखाना रहे ॥
खोल दे कन्टर का मुँह गर देश में पैमाना रहे ।
ताकि हों सरसार पीकर हम मुये हब्वेवतन ॥
और फिर मस्ती में अमृतसर का अफ़साना रहे ।
है मुबारिक वह जमीं जिस जाँ हुए लाखों शहीद ।

या इलाही कौम का कायम यह बुतखाना रहे ॥
 जुल्म डायर देखिये फिर देखिये अपना जिगर ।
 अब तलक सर खम किये हम ज़ेर शुकुराना रहे ॥
 मुद्दा यह था कि आजाये वह सीधी राह पर ।
 और कायमत अब दुख में सफीखाना रहे ॥
 ले गये आखिर पकड़ कर लीडरों को इस लिये ।
 कि फिदाये कौम का दिल गम ये दीवाना रहे ॥
 पर नहीं हम ने तो सीखी है नई तर्ज वफा ।
 दुश्मनों से दोस्ती गैरों से याराना रहे ॥
 क्योंकि उरियानी बजातेखुद है आसी एक लिबास ।
 अपनी कमली से नुमाया टाट शाहाना रहे ॥
 हम फकीरों को नहीं कुछ चाहिये इसके सिवा ।
 तन पै खदर हाथ में जँजीर शाहाना रहे ॥

आबरू सरकार की द

बेगुनाहों पर बमों की बेखतर बोछार की ।
 दे रहे हैं धमकियाँ बन्दूक और तलवार की ॥
 बाग जलियाँ में निहत्थो पर चलाई गोलियाँ ।
 के बल भी गिराया जुल्म की हद पार की ॥
 हम गरीबों पर किये जिसने सितम वे इन्तिहा ।
 बाद भूलेगी नहीं उस डायरे बदकार की ॥

(७)

या तो हम ही मर मिटेंगे या तो ले लेंगे स्वराज ।
होती है इस बार हुज्जत खतम अब हर बार की ॥
शोर आलम में मचा है लाजपती के नाम का
ख्बार करना उन को चाहा अपनी मिट्टी ख्बार की ॥
जिस जगह पर बन्द होता शेर नर पञ्जाब का ।
आबरू बढ़ जायगी उस जेल की दीवार की ॥
जेल में भेजा हमारे लीडरों को बेकसूर ।
लार्ड रीडिंग ने भी अच्छी न्याय की—भरभार की ॥
खून मजलूमों की "सरयू" अब तो गहरी धार में ।
कुछ दिनों में डूबती है आबरू सरकार की ॥

गजल ७

हा बुरी किस्मत से हम बंद मुन्सिफ के पाले पड़ गये ।
कयग करूँ इस गम से मेरे दिल पै छाले पड़ गये ॥
घर छुटा हिज़रत करी गम जेल के सहने पड़े ।
हाथ धोके जब से पीछे युरूप वाले पड़ गये ॥
बेवकूफी थी हमारी घर में दी उन को जगह ।
हिन्द की एक चरसा जमी पर क्या २ कसाले पड़ गये ॥
जेलखाने भर दिये जालिम ने बेजुरमो कसूर ।
हा बुरी किस्मत से कोले कालो के पीछे पड़ गये ॥
कर अब भी तोबा दुनिया के बन्दे बेशऊर ।

(८)

क्या करेगा जब दरे तोबा में ताले पड़ गये ॥
या रसुलिल्लाह कर तु ये करम बहरेखुदा ।
कि अब खिलाफत करने वालों के ताले पड़ गये ॥
होय बद किस्मत जहाँ पहुँचे वही फुटा नसीब ।
कौन थे हम क्या हुये और किस के पाले पड़ गये ॥
अय अरब के चाँद ले तू अपने सितारों की खबर ।
हिन्द तो क्या चीज काबों रिसाले पड़ गये ॥
जान जाने का नहीं गम जान जायेगी जरूर ।
गम तो यह है जीते जी जानों के लाले पड़ गये ॥

गजल ८

भगतसिंह तुझे फिर से आना पड़ेगा ।
सोते भारत को फिर से जगाना पड़ेगा ॥
अरे जब तलक यह न वीरान होंगे ।
इन्हें जैसे तैसे हटाना पड़ेगा ॥ २ ॥
तेरे ग़म में यह कौम तेरी तड़पती ।
बिरांदर इसे फिर उठाना पड़ेगा ॥
मिली तुझ को फांसी तो बेजार हैं हम ।
हजारों भगतसिंह बनाना पड़ेगा ॥ ४ ॥
न अब चैन पायेंगे इंगलैंड वाले ।
तुझे अपनी वंशी बजाना पड़ेगा ॥

(९)

सुखदेव गुरु राज रंजिस न लाना ।
हमें कफससे अब छुड़ाना पड़ेगा ॥
दिखा दें जहां को वो ग़मगीन आंकी ।
खुदो को खुदा से मिलाना पड़ेगा ॥
अभी तक तो प्यासी है काली तुम्हारी ।
तुम्हें उनका खप्पर सजाना पड़ेगा ॥
गुलामी की जंजीर को कौन काटे ।
वतन को वतन पर मिटाना पड़ेगा ॥
अरे अब तो मातम गुलामी की खातिर ।
'उदय' तुम्हको सीना अड़ाना पड़ेगा ॥

गजल ६

हम अपनी शक्ति र तुझे दिखा देंगे जिलमका जौहा
चलेंगे हम वही रस्ता जो कुछ गांधी बता देंगे ॥
हमारा ध्येय शान्ति का पढ़ाया हम को गांधी ने
हम उसका हू बहू पालन तुझे करके दिखा देंगे ॥
यह गन बन्दूक और तीपें धरी रह जायगी सारी ।
हम अपनी शान्ति से ही सारा भूमंडल हिला देंगे ॥
यतीम हम भी नहीं हैं कुछ हमारा भी है कोई आका ।
सताना बेगुनाहों का नतीजा हम दिला देंगे ॥
जमेगी गोलमेज अब स्वर्ग में सारे शहीदों की ।
प्रिंस बहा राम और रहमां को हम अपने बना देंगे ॥

हों नेता बाल गगाघर गोखले और नौरोजी ।
 बैरिस्टर अपना मोतीलाल नेहरू को बना देंगे
 बहस होगी भगतसिंह राजगुरु सुखदेवकी जब वहाँ ॥
 जिरह जब दासकी होगी तेरे औसां भुला देंगे ॥
 शहदी होंगे पिशावर और शोलापुर के परवाने ।
 तेरा जुल्मों सितम सारा वहां जालिम सुना देंगे ॥
 मिलेंगे लाजपत भी वहां रखेंगे लाजपत मा की ।
 तेरी इस पाशविक शक्ति का चकना चूर कर देंगे ॥
 जोश मोहमद अलीखां कर गरज उठेंगे अजमलखां ।
 मिसाले शेर गर्जन कर तेरा लण्डन हिला देंगे ॥
 न जानी शान शोकत की नहीं गाँधी को पहिचाना ।
 ज़फ़र अब्दुल कलाम आजाद भारत को बना देंगे ॥
 हैं आगाशरे पेशोरी मोहमद आलम लाहोरी ।
 डाक्टर किचलू अंसारी तेरे छक्के छुड़ा देंगे ॥
 जवाहरलाल जैसे हैं युवक अब भी नहीं घाटा ।
 यह फिर से मा की गोदी ला जवाहरलाल भर देंगे ॥
 न खाने दें डबल रोटी व बिस्कुट हिन्द में तुझको ॥
 भगा लण्डन को सूखी मछिलियां आलू खिला देंगे ॥
 करेगा पाशविक शक्ति से अत्याचार तू हम पर ।
 हम अपनी शीतलता इन्सानियत तुझको दिखा देंगे ॥
 फैलाया जाल जो आकर तूने कानून का हम पर ।
 तेरे कानून के मजमून के छक्के छुड़ा देंगे ।

आखिरी दावतें अब तो उड़ाले और थोड़े दिन

तू खजूर जुल्य का जालिम चलाले और थोड़े दिन ।

गरीबों बे गुनाहों को सताले और थोड़े दिन ॥

कसम तुझ को मेरे सरकी कसर बाकी न रहजाये ।

न मौका फिर मिले ऐसा जलाले और थोड़े दिन ॥

कहीं प्यासी न रह जाए तेरी तलवार ऐ कातिल ।

हमारा खून पानी सा पिलाले और थोड़े दिन ॥

न अरमीं कुछ रहे बाकी न हसरत दिल में रहजाये ।

अभी शमशीर के जौहर दिखाले और थोड़े दिन ॥

लगाले नील का टीका रहे पहचान तेरी भी ।

हमें घर में हमारे ही मिटाले और थोड़े दिन ॥

चला अब हिन्द से जल्दी भला कब आयेगा फिर २

आखिरी दावतें अब तो उड़ाले थोड़े दिन ।

न होगा हिन्द में तू ही हकूमत भी न ये होगी ॥

“वर्मा” दाम चमड़े के चलाये और थोड़े दिन ।

बांधले बिस्तर फिरंगीया राज अब जाने को है ।

जुलम काफी कर चुके पब्लिक बिगड़ जाने को है ॥

गोलियां तो खा चुके तोप भी हम देखलें ।
 मिटेगें मुल्क पर फिर इंकलाब होने को है ॥
 वीर जवाहर जेल में हैं कौम के वो ना खुदा ॥
 जेलखाने तोड़ देंगे ये हवा चलने को है ।
 कह रहे हैं बाबा गंधी मानलो शरतें तमाम ॥
 वरना फिर नकशा हकूमत का पलट जाने को है ।
 आगये हैं पटेल भी अब कार जारे जंग में ॥
 देखलेना राजशाही बेनिकाब होने को है ।
 लिख दी गांधीने चिट्ठी आखरी अरबिन के नाम ॥
 अब संभल जा फिरंगी वरना निशां मिटने को है ।
 मालवी ने वार अपना कर दिया इंगलैंड पर ॥
 देखलेना मानचेस्टर भी उजड़ जाने को है ॥

पीटते हो पेर नाहक अब ठिकाना देखलो ।
 हो गया आजाद भारत ये जमानो देखलो ॥
 अब कदम जमते नहीं खूं खारियों के हिन्द में ।
 होंने आइने फजर अब आशियाना देखलो ॥
 अपने ही जुल्मों से तुमने हमको आजादी है दी ।
 गैर से ऐमाल नामा बागियाना देखलो ॥
 हम खड़े हैं सामने हटना है पीछे को हराम ।

(१३)

हाथ में बन्दुक ले सीधे निशाना देखलो ।
इम्तहाँ आजाद होने का तुम्हें लेना है गर ॥
फर तोपों के करो और बम्ब गिराना देखलो ।
देखलो इंसाफ डायर लार्ड का पंजाब पर ॥
लार्ड अरविन्द हुकम नादिर वह शियाना देखलो ।
ऐसा हिन्दुस्तान के तुम को रहेंगे याद बस ।
आएगा रोना हरामी माल खाना देखलो ॥

गज़ल १३

मिटारेंगे हकूमत को हम ऐसा करके छोड़ेंगे

हम अपने भारत पर खुद अपना कब्जा करके छोड़ेंगे
तू ऐ बादे सवा जाकर यह पंजम जार्ज से कहदे

कि हम इंगलैंड वालों को लिफ़ाफ़ा करके छोड़ेंगे
गजब की वेड़ियां डाली हैं जो जालिम ने पैरों में

इसी झंकार से हम हशर बरपा करके छोड़ेंगे
न छोड़े जीते जी दुश्मन का पीछा हम वह काले है

अगर छोड़ेंगे तो दुश्मन को मुर्दा करके छोड़ेंगे
अजीजों अब मुराब्बज होने दो गांधी के चरखे को

इसी चरखे से हम दुश्मन को चरखी करके छोड़ेंगे

भजन १४

हमारे मुल्क भारत की यह अखीरी लड़ाई है ।

न होगी जँग फिर ऐसी महातझा ने बताई है ॥

अगर तुम स्वर्ग चाहते हो या जन्नत चाहिये तुमको ।

लिखादो नाम जल्दी से शुरू होगई लड़ाई है ॥

करो तुम जँग दुशमन से अहिंसा धारकर दिल में ।

न ऐसा वक्त आयेगा हवा ऐसी ये आई है ॥

करो तुम हिम्मते मरदा मदद देगा खुदा तुम को ।

बनाया आसमा जिसने जमीं जिसने बनाई ॥

तुम्हें यह जेल की घुड़की दिखाकर के डरायेंगे ।

मगर तुम एक मत सुनना करो इन पर चढ़ाई है
तुम्हारे घर में ईमां की सचाई देख लेने को ।

जमाने भरने आकर के नज़र तुम पर जमाई है

न करना ख्याल ये दिल में कि आज़ादी नहीं होगी

ये थोड़े दिन की सखती है जो जालिम ने चलाई हैं

वह पछतायेगा पीछे से जो ना मानेगा गंधी की ।

तआस्सुब को हटादींजे वतन की यह लड़ाई है

गज़ल १५

जालिमों के जुल्म को बिलकुल मिटाना चाहिये ।

अब तो कुछ वीरो तुम्हें करके दिखना चाहिये ॥

[जबकि तुम्हारे देश में हैं जंगे आज़ादी ठनी ।

क्या तुम्हें इस वक्त में भी मुंह छिपाना चाहिये ॥

आप के अब से बड़े नेता चले गये जेल में ।

कुछ तो गैरत आपको भी शर्म आनी चाहिये ॥

मर्द कहलाते हो तुम कुछ तो करो मरदानगी ।

बर्ना हाथों में तुम्हें चूड़ी चढाना चाहिये ॥

देश की और कौम की हालत को जो सुनता नहीं ।

उनके माथे पर स्याह टीका लगाना चाहिये ॥

गाय और सूअर की चर्बी खून से कपड़े बने ।

ऐसे नापाकों के कपड़ा कौ जलाना चाहिये ॥

अब विदेशी को न वरतें कपड़ा हो या कोई चीज ।

ऐसे सब सामन पर लाहौल पढ़ना चाहिये ॥

हुकम है गांधी का यह सब वस्त्र खदर के बनें ।

शुद्ध खदर की लंगोटी तक बनानी चाहिये ॥

१६

कह रहा है आसमाँ ये सब समा कुछ भी नहीं ।

चार दिन की है हकूमत फिर यहाँ कुछ भी नहीं ॥ १ ॥

जुर्मतू करले सितमगर जितना जी चाहे तेरा ।

कन्स रावण की तरह रहेगा निशाँ कुछ भी नहीं ॥ २ ॥

बेगुनाह भारत के वच्चों को जिह्व तू कर रहा ।

सोचले दिल में तेरा इन्साफ़ येह कुछ भी नहीं ॥ ३ ॥

गरचे दाना है तो तू अपनी वचाले आबरू ।

वरना फिर पछतायेगा यह सेखियाँ कुछ भी नहीं ॥ ४ ॥

गनमशीनों तोप बन्दूकें तेरा वो जेल घर ।

देश भगतों के लिये सामान यह कुछ भी नहीं ॥ ५ ॥
 राह किसकी देखते हो नौजवानों हिन्द के ।
 फिर गदर पैदा कारो अब इन का डर कुछ भी नहीं ॥ ६ ॥
 बोर शेरों की तरह आकर लड़ो मैदान में ।
 ओ छतरसिंह खौफ का हम पर असर कुछ भी नहीं ॥ ७ ॥
 मार कर मर कर करो आज़ाद हिन्दुस्तान को ।
 बख्त है आखिर इनका तुमको डर कुछ भी नहीं ॥ ८ ॥

१७

क्या खबर २। इनकिलाबे रूसियाँ हो जायगा ।
 जुर्म ज़ालिम से भगतसिंह भी फना हो जायगा ॥ क्या० ॥
 हम तो समझै थे हकूमत कर रही है फैसला ।
 ये नहीं मालूम थी धोखे से मारा जायगा ॥ क्या० ॥
 देखना प्रजा में बदका अब असर होता है क्या ।
 फिर दुबारा हिन्द में वोही भगतसिंह आयेगा ॥ क्या० ॥
 यह न समझो अपने दिल में कत्ल हम ने कर दिया ।
 हिन्द के इन नौ जवानों में भगतसिंह आयेगा ॥ क्या० ॥
 देख लेना ज़ालिमों ये होने वाला है असर ।
 जुर्म की हस्ती का तेरे खातमा हो जायगा ॥ क्या० ॥
 जोगेन्द्रसिंह मौजूद है फरजंद वो सरदार का ।
 कुछ दिनों के बाद वो भी बम्ब बना कर लायेगा ॥ क्या० ॥
 हो मुबारिक ज़िन्दगी उसकी वो गर ज़िन्दा रहा ।
 वाप से बढ़ कर छतरसिंह काम वो दिखलायेगा ॥ क्या० ॥
 नौ जवानों हिन्द के उठो पड़े सोते हो क्यों ।
 बख्त है आखीर अब ये फिर न ऐसा आयेगा ॥ क्या ॥